

खुद किए स्टंट : एडिन रोज

रजनीकांत की फिल्म 'जेलर 2' इस समय बॉक्स ऑफिस पर खूब कमाई कर रही है . इसमें एडिन रोज एक नए अंदाज में नजर आ रही है. साऊथ इंडियन फिल्मों में अपनी पहचान बना चुकी एडिन को इस फिल्म के एक्श 'भरपूर भूमिका निभाने का मौका मिला है. खास बात यह है कि उसने शारीरिक रूप से चुनौतीपूर्ण सीक्वेंस में हिस्सा लिया और बिना बॉडी डबल की मदद के अपने स्टंट खुद किए.

एडिन की शारीरिक रूप से चुनौतीपूर्ण एक्शन भूमिकाओं में दिलचस्पी का एक कारण मार्शल आर्ट्स के प्रति उसका लगाव है.

वह कम उम्र से ही इस कला में रुचि रखती है और बॉक्सिंग तथा समुद्राई तलवारबाजी जैसी विधाओं में ट्रेनिंग ले चुकी है. इसके अलावा, उसे मिक्स्ड मार्शल आर्ट्स और कटाना ट्रेनिंग में भी दिलचस्पी है. उसकी यह तैयारी 'जेलर 2' में एक्शन दृश्यों को निभाने में खूब काम आई.

हाल ही में एडिन ने बॉलीवुड में अपने शुरुआती दिनों के दौरान आई मुश्किलों के बारे में बात करते हुए खुलासा किया, “बॉलीवुड में मुझे अपने शरीर की बनावट की वजह कुछ प्रोजेक्ट्स में काम नहीं मिल पाया.”

उसने बताया कि उसे अपने हिप्स (कूल्हों) का आकार कम करने के लिए कहा गया था, जबकि ऐसा करना उसके लिए व्यावहारिक रूप से संभव नहीं था, क्योंकि यह उसके शरीर की प्राकृतिक बनावट का हिस्सा है. उसने कहा कि वजन में बदलाव किया जा सकता है, लेकिन हड्डियों की बनावट को बदला नहीं जा सकता.

उसने कहा, “मेरे शरीर का निचला हिस्सा थोड़ा भरा हुआ है और मुझे अपने हिप्स का आकार कम करने के लिए कहा गया था.”

रखी थी 'गंदी शर्त' डायरैक्टर ने : नीति टेलर

टी.वी. शो 'कैसी ये यारियां' से घर-घर में लोकप्रियता पाने

वाली नीति टेलर ने अपने करियर के शुरुआती दिनों में कास्टिंग कारूच का सामना करने का खुलासा किया है. उसने बताया कि एक तेलुगु फिल्म के निर्देशक की अनुचित मांग से वह इतनी आहत हुई थी कि उसने फिल्मों में काम न करने का फैसला कर लिया था . उसने बताया कि पहली तेलुगु फिल्म की शूटिंग पूरी होने के बाद उसी निर्देशक ने उसे अपनी अगली फिल्म के लिए फोन किया. बातचीत के दौरान निर्देशक ने उसके सामने शारीरिक संबंध बनाने की शर्त रख दी. यह सुनकर नीति हैरान रह गई . उसने फोन काटकर निर्देशक का नंबर ब्लॉक कर दिया और अपनी मां को पूरी घटना बताई.

नीति ने बताया कि इस घटना ने उसे भीतर तक झकझोर दिया था . उसने निर्देशक को पहले भी दूसरी लड़कियों के साथ देखा था, लेकिन उसे अंदाजा नहीं था कि वह उसके सामने भी ऐसी मांग रख सकता है. उसके अनुसार, उस समय वह इतनी हैरान थी कि उसने दोबारा फिल्मों में काम न करने का फैसला कर लिया था . उसने यह भी स्वीकार किया कि शुरुआत में वह इस घटना को लेकर किसी से बात नहीं कर पाई थी, क्योंकि उसे समझ ही नहीं आ रहा था कि उसके साथ जो हुआ, उससे कैसे निपटे .

हालांकि, इन दावों के बीच उसने उस निर्देशक का नाम उजागर नहीं किया है . नीति को धारावाहिक 'कैसी ये यारियां' में नंदिनी मूर्ति के किरदार में दर्शकों ने काफी पसंद किया था. इसके अलावा वह 'बड़े अच्छे लगते हैं' और 'ये है आशिकी' जैसे शोज में भी नजर आ चुकी है. छोटे पर्दे के साथ उसने दक्षिण भारतीय सिनेमा में भी काम किया है. उसका यह खुलासा फिल्म इंडस्ट्री में कलाकारों के सामने आने वाली अनुचित मांगों के मुद्दे को फिर चर्चा में लाता है.

एक अनोखे सिनेमाई अनुभव से जोड़ने की कोशिश भी है.

किरदार में नयापन ही असली आकर्षण

यामी के करियर को देखें तो अलग-अलग तरह की कहानियों में काम करने की उसकी इच्छा

और व्यवस्था नजर आने लगती है लेकिन इस आदर्श बहु के व्यक्तित्व के पीछे कई रहस्य छिपे हैं. जैसे-जैसे उसके देवर को उस पर संदेह होने लगता है, कहानी में रहस्य और डर का पहलू गहराने लगता है. इस किरदार की खासियत यह है कि

यामी जौतम ने अपनी अदाकारी से साबित किया है कि वह किसी एक छवि में बंधकर नहीं रहना चाहती. राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार से सम्मानित यह अभिनेत्री अब हॉरर-कॉमेडी 'नई नवेली' में दर्शकों को एक नए अवतार में नजर आ रही है. उसके लिए हर फिल्म खुद को चुनौती देने, कुछ नया सीखने और एक कलाकार के रूप में बेहतर बनने का अवसर है.

इसमें मासूमियत और रहस्यमय व्यक्तित्व के बीच कई परतें हैं. यामी के लिए इन्हें पर्दे पर उतारना केवल अभिनय का

लगातार दिखाई देती है . वह किसी भूमिका को केवल इसलिए स्वीकार नहीं करना चाहती कि वह लोकप्रिय हो सकती है या उससे उसे अधिक पहचान मिलेगी. यामी के लिए यह समझना जरूरी है कि किरदार उसे एक कलाकार के रूप में क्या नया करने का मौका देता है.

यामी का मानना है कि एक कलाकार को लगातार आगे बढ़ने की कोशिश करनी चाहिए . जब वह बार-बार एक जैसे किरदार निभाता है, तो उसके लिए खुद को नए सिरे से परखने के अवसर सीमित हो सकते हैं. इसके उलट, अलग-अलग शैलियों की फिल्में कलाकार को अपने भीतर छिपी संभावनाओं को तलाशने में मदद करती हैं. यही वजह है कि वह ऐसी कहानियों की तलाश में रहती है, जिनमें उसे कुछ अलग करने का अवसर मिले. उसके लिए किसी भूमिका की अहमियत इस बात से तय होती है कि वह उसे कितना उत्साहित करती है और वह उससे क्या सीख सकती है.



अभ्यास नहीं, बल्कि दर्शकों को

सीधी बात

■ लिखने का कब से शौक था ?

मैं बचपन से ही लिखती हूं. बाद में मैंने इंटरनेट मीडिया और ब्लॉग पर अपनी चीजें साझा कीं. लोगों की सकारात्मक प्रतिक्रिया बहुत उत्साहजनक थी. मन में इच्छा थी कि किसी समय किताब लिखूं और फिर यह विचार साकार हो गया.

■ किताब की शुरुआत में ही आपने अपने थैरेपिस्ट का जिक्र किया है, इसे साहसी कदम कहा जाएगा...

यह किताब का बहुत महत्वपूर्ण अध्याय है. जिंदगी में ऐसी कई परिस्थितियां आती हैं, जिन्हें हम अकेले संभाल नहीं पाते. उस दबाव

टीवी के बाद वे फिल्म और ओटीटी पर छाई और अब शेफाली शाह ने

लेखन की ओर कदम बढ़ाए हैं. अपनी किताब 'द आडेसिटी आफ वीडिंग :

ए सार्ट आफ मेमोयर' में बचपन से लेकर जीवन से जुड़ी कई अहम बातों

को शेफाली ने किया है साझा....



लिए नहीं है.

■ अमिताभ बच्चन आपको 'वक्त' के सेट पर मालकिन कहकर बुलाते थे...

मुझे इस तरह की तारीफ सुनना पसंद नहीं है, लेकिन जिस अपनत्व से वह मुझे संबोधित करते हैं, उससे बहुत फर्क पड़ता है. सेट पर जब आप अमित जी से मिलते हैं, तो वह सामने वाले को इतना सहज महसूस करा देते हैं कि उनके साथ बातचीत करते ही झिझक खत्म हो जाती है.

■ 'वक्त' में आपने अपनी उम्र से बड़ी महिला की भूमिका निभाई थी. उसके बाद बच्चन जी ने आपको 'लास्ट लियर के लिए बुलाया, आगे चलकर आपको राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिला....

उस फिल्म ने मेरे पास आने वाले काम को लेकर मुझे मुश्किल स्थिति में डाल दिया था, लेकिन दूसरी तरफ देखें तो 'वक्त' के लिए मेरा नाम खुद बच्चन जी ने सुझाया था. यह जानना सुखद होता है कि जिस ईंसान को आप आदर्श मानते हैं, वही आपके काम को अच्छा मानता है, तो यह बहुत भरोसा देता है.

■ राष्ट्रीय पुरस्कार मिलने के बाद भी आपको लंबे समय तक काम नहीं मिला. इस दौर को कैसे संभाला ?

राष्ट्रीय पुरस्कार के बाद लोगों को लगा कि वाह शानदार अभिनेत्री है. उसी दौरान 'गांधी, माय फादर' को लेकर सराहना मिली, लेकिन वह सराहना काम में नहीं बदली. कई ऐसे किरदार थे, जो शायद अच्छे रहे हों, लेकिन मैं उन्हें निभाने को लेकर आश्वस्त नहीं थी. इस वजह से भी मेरे करियर में लंबा गैप आया.

हिजात श्रीवास्तव



हिंदी सिनेमा में अपनी अलग पहचान बनाने के लिए यामी ने हमेशा विविधता को महत्व दिया है. उसने कभी अपनी पसंद को किसी एक शैली या किरदार तक सीमित नहीं रखा. 'विवकी डोनर', 'बाला', 'ए थर्सडे', 'दसवीं', 'चोर निकल के भागा', 'ओएमजी 2' और 'आर्टिकल 370' जैसी फिल्मों में उसके अलग-अलग रूप देखने को मिले.

खास तौर पर 'आर्टिकल 370' में जूनी हक्सर के किरदार ने उसे नई पहचान दिलाई और इस फिल्म के लिए उसे सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार मिला . इस सम्मान ने जहां उसके काम को एक बड़ी पहचान दी, वहीं उसके भीतर अपने अभिनय को और बेहतर बनाने की इच्छा भी मजबूत हुई. यामी मानती है कि किसी कलाकार की यात्रा कभी पूरी नहीं होती . हर नई फिल्म के साथ कुछ नया सीखने, अपनी सीमाओं को परखने और दर्शकों की उम्मीदों पर खरा उतरने का अवसर मिलता है . यही

यामी ने अब हॉरर-कॉमेडी फिल्म 'नई नवेली' के साथ एक बिल्कुल अलग दुनिया में कदम रखा है. फिल्म में वह एक ऐसी नवविवाहित दुल्हन की भूमिका में है जो नए घर में आते ही सब कुछ बदल देती है. मेरठ के एक अस्त-व्यस्त घर में उसके आने से खुशहाली

भगवान ऐसा दर्द किसी को न दें: इशिता दत्ता

बॉलीवुड में हीरोइनों के जीरो फिगर के खूब चर्चे होते हैं, लेकिन इशिता दत्ता की कहानी सुनकर वजन घटाने के नुस्खे खोजने वालों के भी होश उड़ जाएंगे .

'दृश्यम' फेम इशिता ने बताया कि फ्रैनेंसी के बाद बीमारी ने उसे ऐसा घेरा कि महज 40 दिनों में 15 किलो वजन



कम हो गया. यानी यहां फिटनेस का कोई फंडा नहीं, बल्कि सेहत की ऐसी मुश्किल थी, जिससे गुजरना किसी के लिए भी आसान नहीं.

इशिता का दर्द छलका तो उसने ऐसी बात कही, जो हर किसी को सोचने पर मजबूर करती है. उसने कहा, “मैं उम्मीद करती हूं कि किसी के साथ ऐसा न हो.”

अब जरा सोचिए, जिस वजन को घटाने के लिए लोग जिम में पसीना बहाते हैं, वही वजन बीमारी के कारण घट जाए तो खुशी कैसी ? इशिता की कहानी बता रही है कि हर स्लिम लुक के पीछे ग्लैमर नहीं, कभी-कभी दर्द भी छिपा होता है. इशिता ने साल 2015 में फिल्म 'दृश्यम' से बॉलीवुड में डेब्यू किया था. इसी फिल्म के दौरान उसकी अजय और काजोल से अच्छी जान-पहचान हो गई. अजय ने इशिता और उसके पति वत्सल सेठ को मिलाने में भी अहम भूमिका निभाई थी.

अवनीत कौर ने 2010 में डांस रियलिटी शो 'डांस इंडिया डांस लिटिल मास्टर्स' से अपने करियर की शुरुआत की. इसके बाद वह 'डांस के सुपरस्टार्स' और 'झलक दिखला जा' जैसे शोज में भी नजर आई. डांस के मंच से मिली पहचान ने उसके लिए टैलीविजन यानी छोटे पर्दे की दुनिया के दरवाजे खोले .

छोटी उम्र में बड़ी उड़ान : अवनीत कौर

वह सोशल मीडिया पर लगातार सक्रिय रहती है. उसके इंस्टाग्राम पर 3 करोड़ से अधिक फॉलोअर्स हैं. अवनीत का जन्म पंजाब के जालंधर में 13 अक्टूबर, 2001 को हुआ. उसने 2012 में टैलीविजन शो 'मेरी मां' से अभिनय की शुरुआत की. इसके बाद वह 'सावित्री- एक प्रेम कहानी', 'एक मुट्ठी आसमान' और 'हमारी सिस्टर दीदी' जैसे धारावाहिकों में नजर आईं.

ऐतिहासिक धारावाहिक 'चंद्र नंदिनी' में राजकुमारी चारुमति की भूमिका ने भी उसके अभिनय को पहचान दिलाई.

हालांकि, उसे व्यापक लोकप्रियता धारावाहिक 'अलादीन - नाम तो सुना होगा' से

टॉम क्रूज लेजेंड हैं. मुझे उन्हें लाइव एक्टिंग करते हुए देखने का मौका

मिला जो जादू की तरह था. क्या पता कभी हम साथ में शूट करें.

मिली. 2018 से 2020 के बीच प्रसारित इस शो में उसने राजकुमारी यास्मीन का किरदार निभाया. अभिनेता सिद्धार्थ निगम के साथ

उसकी जोड़ी को दर्शकों ने पसंद किया. इस भूमिका के बाद अवनीत युवा दर्शकों के बीच लोकप्रिय चेहरा बन गईं. 2014 में रिलीज हुई रानी मुखर्जी की फिल्म 'मर्दानी' से अवनीत ने फिल्मों की दुनिया में कदम रखा. इस फिल्म में अवनीत मीरा का किरदार निभाया. इसके बाद वह 'मर्दानी 2' में भी नजर आईं.

2023 में रिलीज हुई फिल्म 'टीकू वै शेरु' में उसने नवाजुद्दीन सिद्दीकी के साथ लीड रोल किया. इस फिल्म में उसने टीकू का किरदार निभाया था. इसके अलावा वह 'छिड़ियाखाना' और 'लव की अरेंज मैरिज' जैसी फिल्मों में भी



दिखाई दी. 2025 में रिलीज हुई फिल्म 'लव इन वियतनाम' में भी उसने अभिनय किया.

'टॉम क्रूज' का लिया इंटरव्यू

अवनीत कौर ने बेहद कम उम्र में ही वह सफलता दर्ज की है जिसका सपना बड़ी-बड़ी हीरोइनें देखती हैं. उसकी पहुंच अब हॉलीवुड तक हो चुकी है. हाल ही में लंदन में फिल्म 'डिगर' के वर्ल्ड प्रीमियर के दौरान अवनीत को अपने पसंदीदा हॉलीवुड सुपरस्टार टॉम क्रूज से दोबारा मिलने और बातचीत करने का मौका मिला. खास बात रही कि उसे टॉम का इंटरव्यू लेने के लिए बुलाया गया था. अवनीत के लिए टॉम क्रूज से

मुलाकात किसी खास अनुभव से कम नहीं रही. मुलाकात की शुरुआत टॉम के अवनीत को गले लगाने से हुई, जिसके बाद दोनों आमने-सामने बैठकर फिल्म और उसके एक खास दृश्य पर चर्चा करते नजर आए.

टॉम ने बताया कि फिल्म में उसका लगभग 10 मिनट लंबा संवाद एक ही शॉट में फिल्माया गया था . अवनीत इस दृश्य को देखकर काफी प्रभावित हुईं. उसे लगा कि इतने लंबे संवाद को एक ही टेक में प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने के लिए कलाकार का अपने किरदार से गहराई से जुड़ना जरूरी है. अवनीत के लिए यह मुलाकात सिर्फ अपने पसंदीदा सितारे से मिलने तक सीमित नहीं रही, बल्कि उसे एक अनुभवी अभिनेता के काम करने के तरीके को करीब से समझने का मौका भी मिला.

गत वर्ष भी अवनीत की टॉम क्रूज से मुलाकात हुई थी. उस जैसे हॉलिवुड स्टार से मिलने का अनुभव कैसा रहा, पर अवनीत कहती है, “दुनिया से ऊपर. टॉम क्रूज लेजेंड हैं, मुझे उन्हें लाइव एक्टिंग करते हुए देखने का मौका मिला. उनको शूट करते हुए देखना जादू की तरह था. क्या पता कभी हम साथ में शूट करें. भविष्य में मुझे उनके साथ काम करने को मिले, मैं यही सपना देख रही हूं.”